DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant professor
Deptt. of Samksrit
S.R.A.P. college, Bara Chakia
BRABU — Muzaffarpur

B.A.(Hons.), Part — I
Subject — Sanskrit
Paper — I

5×3=15 Marks

कारकसूत्र - व्याख्या

26. आख्यातोपयोगे (1/4/29)

नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने में वक्ता की अपादान संज्ञा होती है (अर्थात् ब्रह्मचर्यादि नियम का पालन करते हुए विद्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में आख्याता=अध्यापक की अपादान संज्ञा होती है। यथा— उपाध्यायाद् अधीते (अध्यापक से पढ़ता है)— यहाँ 'उपाध्याय' से नियमपूर्वक विद्या ग्रहण करना सूचित किया गया है इसलिए 'उपाध्याय' की उक्त सूत्र से अपादान संज्ञा होने पर उससे पंचमी विभक्ति हुई। प्रश्न होता है— उक्त सूत्र में 'उपयोग = नियम पूर्वक विद्या ग्रहण' क्यों कहा? उत्तर है— न कहने पर 'नटस्य गाथां शृणोति (नट की गाथा सुनता है)'— इस वाक्य में 'नट' की उक्त सूत्र से अपादान संज्ञा हो जायेगी। कहने पर इसलिए नहीं होती कि यहाँ नट से गाथा सुनने में पूर्वोक्त ब्रह्मचर्य आदि नियम की अपेक्षा नहीं है, सुनना मात्र अभीष्ट है।